आशा पाण्डेय

तितली रानी

रंग -बिरंगी तितली प्यारी,
लगती है यह सबसे न्यारी ,
लाल रंग के पंख लिए है
ओढ़े छीटदार चूनर,
नाच रही क्या पता कहाँ से
आता है ढोलक का स्वर ,
घूम रही है लिए संग में ,
देखो रंगो भरी पिटारी।

फूलों की बगिया में उड़ती
कलियों में मंडराती है ,
इसके पीछे दौड़ रही हूँ
लेकिन हाथ न आती है,
चाह रही मैं इसको पकडूँ,
भाग -भागकर मैं हारी ।

उड़ती डाली-डाली तितली
फूलों से बतियाती है ,
और रात होने से पहले
चली कहाँ ये जाती है
कोई तो यह मुझे बताए,
पूछूँ मैं बारी-बारी।

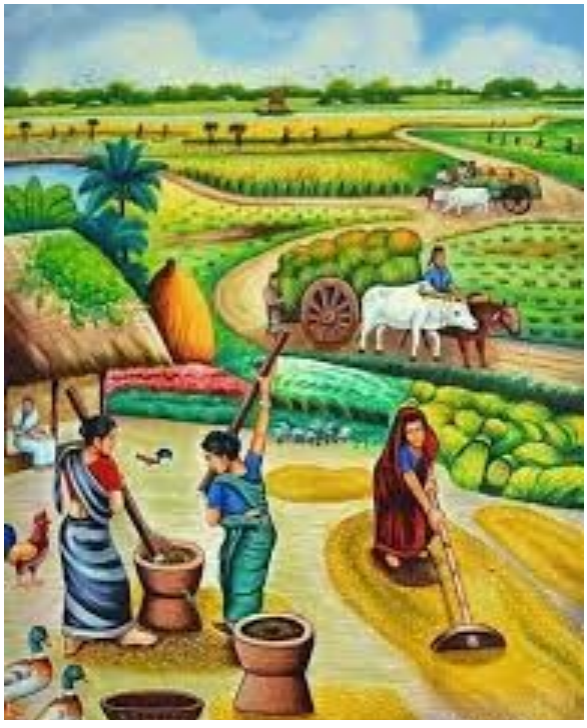

कैसा होता गाँव

मम्मी जी तुम मुझे बताओ,
कैसा होता गाँव?

कैसा पनघट कैसा पोखर,
कैसी ताल तलैया?
कैसा होता है चरवाहा,
कैसी होती गैया?

कैसे बहे गाँव में नदियाँ,
पुरवाई क्या होती?
पेड़ों की ऊँची डाली पर,
चिड़िया कैसे सोती ?

मम्मी जी कैसी होती है
देखूँ पीपल छांव?

गेहूँ दाल चना चावल की,
खेती कैसे होती?
ये किसान की धरती मैया ,
सोना कैसे देती?

चलकर मुझको एक बार तुम,
ऐसा गाँव दिखाओ ।
चलो शहर से दूर चलो अब,
मुझको गाँव घुमाओ।

नदी किनारे जा, देखूँगा,
कैसी होती नाव?

 ISSN:2583-8849